

संक्षिप्त दासबोधामृत : अध्याय 2 : स्वगुण_परीक्षा व त्रिविध_ताप व नवविधा_भक्ती

(मूळ दासबोध दशक 3 : स्वगुण_परीक्षा व त्रिविध_ताप)

जन्म दुःखाचा अन्कुर | शोक, भयान्चा सागर | कर्म सन्चितान्चे फळ | जीवासी बन्धन शरीराचे (२.१) [३.१.१_४]

जन्म जीवाची अवदशा | चिन्ता, क्रोध, अहन्तेचा वसा | नरक, चर्मकुण्डान्चा गलका | छळवाद भूक तहानेचा (२.२) [३.१.६_४]

झाला राव अथवा रन्क | पोटात विष्ठा, छातीत कफ | नाकी मेकुड, डोळ्यात चिपुड | मुख_कमली 'थुन्क' चुकेना (२.३) [३.१.२१_३४]

नाना व्याधीन्चे उमाळे | नाना अपाय अपघातान्चे | नाना अनुभव शोकादिकान्चे | आजीवन सर्वासही चुकेना (२.४) [३.२.१_३४]

तारुण्यी क्षण एक अंतुरी न दिसे | जीव कासावीससा होतसे | कैवार तिचा सदैव घेतसे | बोले नीचोत्तरे मायबापासी (२.५) [३.२.४२_४९]

'स्त्री'कारणे झाला लोभी | सांडिला धर्म, ईश्वर_भक्ती | सर्वस्वाची केली सान्डी | तो अकस्मात मरे भार्या (२.६) [३.२.५३_५८]

'स्त्री' केली दुसरी कुणी कुणी | अथवा कुणी पापी परद्वारी | शुभाशुभ काही उरलेच नाही | तो क्षय रोगे ग्रासिले कायेला (२.७) [३.३.१४_१८]

वैद्ये देता योग्य औषधे | मरता मरता वाचला वाटे | नवस देवान्चे फेडिले सारे | आयु वर्धन पावावयासी (२.८)

वंश वेलीला लागली फळे | क्वचित् काळ सुखात जातसे | तो ते लक्ष्मी रुसोनि जातसे | भिकेस लागली पोरे बाळे (२.९) [३.४.१_३]

घरचा पाडा मोडा विकून | रोकडा खर्चुनी आणिले धान्य | ते दोन दिवसात जाता संपुन | भीक मागणे पुनः प्राप्त झाले (२.१०)

'ऋण' घेऊन घर ठेवले गहाण | तोही रोकडा गेला संपुन | 'ऋण' न फेडता गेले हातातुन | घरही, मग हा निघे विदेशी (२.११)

आपुला गांव राहिला मागे | उद्वेगे चित्त भ्रमित झाले | मग रुदन प्रारम्भिले | उच्चस्वरे (२.१२) [३.४.३४_५१]

विदेशी काही व्यासन्ना लाभला | जीवास थोडासा दिलासा मिळाला | तोच आवर्षण काळ पातला | हाहाःकार माजे चोहीकडे (२.१३) [३.५.१_११]

मुले भांडुनी वेगवेगळी झाली | बापास देती एक खोली | तोच अकस्मात धाडी आली | लुटोनि नेल्या लेकी सुना (२.१४) [३.५.१६_२८]

वार्धक्ये देह खन्गला | वात पित्ते अन्न पचेना | प्राणिमात्र म्हणती हा का मरेना ? | खायला काळ पृथ्विचा_भार (२.१५) [३.५.३६_४८]

ऐसा हा ताप 'जगण्या'चा | भवसागरी तडफडण्याचा | शोक सागरी डुम्बण्याचा | त्रिविध रूपे गान्जी सकला (२.१६)

पहिला ताप आध्यात्मिक | दुसरा तो आधिदैविक | तिसरा जाणा आधिभौतिक | लक्षणे त्यान्ची जाणोनि घ्यावी (२.१७) [३.६.१_११]

देह, इन्द्रिय, प्राणेन सुखम् दुःखम् च प्राप्यते | इमम् 'आध्यात्मिकम्' तापम् पीडते सर्व देहिनाम् (२.१८)

देह, इन्द्रिये आणखी प्राण | यान्चे आधि_व्याधि योगे करून | जे जे होते दुःख सम्पादन | तो ताप आध्यात्मिक जाणावा (२.१९) [३.६.१३_१५]

उदाहरणार्थ पडसे वा खोकला | दमा, ज्वर, खरूज, लचका | हगवण, मूळव्याधि, अपचन, उचक्या | ताप हा आध्यात्मिक जाणावा (२.२०) [३.६.१६_२५]

क्षुधा, तृष्णा, निद्रानाश | पोटशूल, आंव, जखम | भ्रमिष्टपणा, अति_विस्मरण | ताप हा आध्यात्मिक जाणावा (२.२१) [३.६.२६_४५]

चाळीशीत लागला चष्मा | वा वार्धक्ये कमरेत वाकला | केस झडले, आली अशक्तता | ताप हा आध्यात्मिक जाणावा (२.२२)

[३.६.४६_५५]

आता **आधि_भौतिक** ताप लक्षणे | सर्व भूतान्चे सन्योगे लाभणे | जैसे का साप, वा डांस चावणे | जाणोनि घेउया थोडक्यांत (२.२३) [३.७.१_५]

सर्व_भूतेन सन्योगात् सुखम् दुःखम् प्रजायते | तत् सर्वम् हि संतापम् **आधि_भौतिक** इति स्मृतः (२.२४)
सजीव भुते पशु, पक्षि कीटकादिक | निर्जीव भूते गृह, वाहन, सूर्यादिक | यान्च्या योगदानाने जे प्राप्त दुःख | ते **आधि_भौतिक**
जाणावे (२.२५) [३.७.१_५]

सुसरीने नेले, व्याघ्रे खाल्ले | खळाळी पाण्यात सापडुन मेले | राजाज्ञेने तुरुन्नात डाम्बले | हे सर्वही ताप **आधि_भौतिक**
(२.२६) [३.७.१०_३५]

तस्कर अथवा दावेदार | अवचित लुटती वा करिती संहार | वाटेत जाता धडकली कार | हे सर्वही ताप **आधि_भौतिक**
(२.२७) [३.७.४७_६६]

युद्ध, भूकम्प, ज्वालामुखी, महामारी | अतिवर्षा, महापुर, रोगान्च्या साथी | चक्रीय वादळे, झन्झावाती | हे सर्वही ताप
आधि_भौतिक (२.२८) [३.७.६७_८७]

शुभाशुभेन कर्मणा देहान्ते यमयातना | स्वर्ग, नरकादि भोक्तव्यम् इदम् चैव '**आधिदैविकम्**' (२.२९)
आता **आधिदैविक** ताप लक्षणे | शुभ, अशुभ कर्म फलान्चे गुणे | खाण्या, वागण्यातील चुकीन्च्या मुळे | होणारी पीडा, व्याधी,
व्यथा (२.३०) [३.८.१_२]

मदान्धपणे अविवेके | जाणून ब्रूजून वा दुर्लक्षतेमुळे | घडलेल्या अकृत्य दुष्कृत्यामुळे | 'पाप'सन्धय सांठतच जातो (२.३१)
[३.८.३_८]

नगराधिपती राज्याधिपती | राष्ट्राधिपती न्यायाधिपती | आदिकाद्वारे दण्डने घडती | तैसेचि दैवी दण्डनही घडे (२.३२)
[३.८.९_१२]

नियम जे दैवी वा प्रकृतीचे | तेच यम_ब्रह्मदेवादिकान्चे | शब्द कोणताही वापरल्याने | भावार्थ एकच तो जाणून घ्यावा (२.३३)
[३.८.१३_१७]

जे जे काही जन्मास येते | त्या सर्वांना 'मृत्यू' न चुके | कधी ना कधी निश्चितपणे | घडणार हे जाणूनच वतवि (२.३४)
[३.९.१_१२]

ऐसे जाणोनिया जीवे | जीवनाचे 'सार्थक' करावे | जगी मरणा नन्तरही रहावे | '**सत्कीर्ति**' रूपे (२.३५) [३.९.४४]

भगवन्त भावाचा भुकेला | ज्याने सद्भावे हाकारिला | त्यास पावेल सन्कट काला | धांव घेई भक्तासाठी (२.३६)
[३.१०.१_११]

जैसा 'भाव' जयापाशी | तैसाच 'देव' त्याचेपासी | जाणे 'भाव' **अन्तर_साक्षी** | प्रत्येक प्राणीमात्राचा (२.३७) [३.१०.१३]

'विषय'जनित जे जे सुख | त्याचेच पाठीशी लपोनि 'दुःख' | जैसे का पेढे खाता अगणित | पोटदुखी वा हगवण पुढे ठाके (२.३८)
[३.१०.६५_६६]

म्हणोनिया शहाण्याने | 'विषय'सुख **आवश्यक** तितुकेचि भोगणे | त्याचेच पाठीशी न लागणे | रमवावे मन भगवद्भजनी (२.३९)
[३.१०.६७]

(मूळ दासबोध दशक ४ : नवविधा भक्ती)

ऐका सकल श्रोते जन | कैसे असते "भगवद्भजन" | भक्ति_भाव पूर्ण जे जे करिती सज्जन | देवासी 'प्रिय' ते होती सहज
(२.४०) [४.१.१_५]

श्रवणम् कीर्तनम् विष्णोः स्मरणम् पादसेवनम् | अर्चनम् वन्दनम् दास्यम् सख्यम् आत्मनिवेदनम् (२.४१)

सर्व प्रथम, सर्वातही सोपी | 'श्रवण_भक्ति' ऐकण्याची 'युक्ति' | एकवटून मन, चित्त लावुनी | बुद्धिग्राह्य ज्ञान ते स्मरणी ठेवा
(२.४२)

आशा, उषा, लता दीदी | अनुराधा, मन्ना डे इत्यादिकान्वी | अभन्ग, दोहे, वाणी सन्तान्वी | ऐकून जाणून आचरणी आणावे
(२.४३)

अवश्य ऐकाव्या 'वार्ता' रोजच्या | परन्तु **वाह्यात चर्चा** आदिका | अथवा 'मोबाइल'वरच्या **गप्पा** | यात वेळ वाया घालवू नये
(२.४४)

आध्यात्मिक ज्ञान सम्पादावे | 'श्रवण_भक्ति'ने हे साधावे | 'उपास्य' दैवत जे स्वतःचे | त्याविषयी ऐकावे हरिकथामृत (२.४५)

कर्म, उपासना, ज्ञान मार्ग | योग, सिद्धान्त, वैराग्य मार्ग | व्रते तीर्थयात्रा, पुरश्चरण मार्ग | श्रवण करावे श्रद्धेने (२.४६)
[४.१.७_१०]

ऐसे हे अवघेचि ऐकावे | परन्तु 'सार' शोधून घ्यावे | 'असार' ते जाणोनि त्यागावे | यासि नाव 'श्रवण_भक्ति' (२.४७)
[४.१.७_२९]

बहुत करावे पाठान्तर | कण्ठी धरावे ग्रन्थान्तर | भगवद्कथा निरन्तर | करीत जावी (२.४८) [४.२.३]

भगवन्ताची कीर्ती गायन | सगुण अवतारान्चे वर्णन | या कार्यासच नांव '**कीर्तन**' | 'निरूपणी' निर्गुण ज्ञान वर्णावे (२.४९)
[४.२.९_२३]

कीर्तने सन्तोषे परमात्मा | जनासि सान्गोनि समजाविता | आपुले ज्ञानही वाढते चतुर्विधा | प्रत्येक वेळी सातत्याने (२.५०)
[४.२.२७_३१]

आता **भक्ति 'विष्णोः स्मरणं'** | जागृती येताच निद्रेतुन | हरि नामाचे उच्चारण | सतत मनोमनी करीत जावे (२.५०) [४.३.१_३]

बालपणीच संवय लागता | मरे पर्यन्त सांभालोनि वर्तता | 'मोक्ष' मुठीतच राहिल सर्वदा | चिन्ता, उद्वेगादिका पासोनि (२.५१)
[४.३.४_२१]

देवत्व आहे सर्व सृष्टित | चर_अचर, जड, चैतन्यात | तरीही अज्ञानियास न दिसे दृष्टीस | मग **पादसेवन_भक्ति** करावी कैसी ?
(२.५२)

जे दृष्टीस दिसेचना | मनास अनुभवास येईचना | सद्गुरु विना आकलेना | म्हणुनी सेवावा सद्गुरु (२.५३) [४.४.२_१०]

संत, सद्गुरु सेवावे | अथवा देउळी सेवावे | स्वगृहीच मायबाप सेवावे | पुण्डलीकासम घरच्या घरीच (२.५४)

देव ब्राह्मण, महानुभाव | कष्टी, ऋग्ण, पन्नू मानव | गोमातादिक पशु वा वृक्ष | वट, तुलसीची करावी सेवा (२.५५)
[४.४.२३_२६]

आता ऐका '**अर्चन**' भक्ती | शास्त्रोक्त उपचारान्च्या रीती | समजोनि घेऊन पूजाव्या मूर्ती | घरी, दारी, पारी देउळी (२.५६)
[४.५.१_३]

देव, ब्राह्मण, साधू, सन्त | अतिथी, अग्नी, नदी वा समुद्र | परमात्मा सर्वांठाची सदोदित | भावानुसार पूजावा (२.५७)
[४.५.४_१४]

हेही कठिण वाटता | उचला बरासा दगड, धोण्डा | अथवा बरा दिसणारा खडा | पूजावा तोच सद्भावसेवी (२.५८)

शास्त्रोक्त उपचार नसता माहीत | वहा फूल, पान जोडा हात | मनातील भाव जाणुनि सदाशिव | सन्तोषतो पूर्ण भक्तावरी
(२.५९)

तुकाई, जोगाई अथवा विठाबाई | खण्डोबा, म्हसोबादिक देवता सर्वही | सुप्रसन्न होती भक्तालागी | अन्तःकरणी सद्भाव

पाहोनिया (२.६०)

काळ, वेळ, तब्येत | पाहुनि मनोमनी कल्पना करीत | मानसपूजेनेही सन्तोषे देव | अन्तर्यामी सर्व साक्षी (२.६१)

जे जे आपणास पाहिजे | ते ते कल्पून वाहिजे | येणे प्रकारे कीजे | मानस पूजा (२.६२) [४.५.३३]

आता एका सावधान | सहावी भक्ती जी 'वन्दन' | नमस्कारावे साधू, सज्जन | इष्ट मूर्ती वा गभस्तीसी (२.६३) [४.६.१_३]

आकाशात् पतितम् तोयम् यथा गच्छति सागरम् | सर्व देव नमस्कारः केशवम् प्रति गच्छति (२.६४)

याकारणे सर्व देवतासी | नमस्कारावे अत्यादरेसी | जळोनि जाती पाप राशी | 'विनम्रता' बाणे अन्नात (२.६५) [४.६.११_१४]

सूर्य नमस्कार, गुरु नमस्कार | इत्यादि योगासनान्चे प्रकार | शिकोनि करिता सोपस्कार | आरोग्यही वृद्धिनात होते (२.६६)

ज्या भाण्ड्यात ओतावे जल | त्या भाण्ड्यासारखाच घेई आकार | तैसाचि अन्तर्यामी देव | जाणोनिया भाव पावे भक्तासी (२.६७)

देवालयान्चा जीर्णोद्धार | नव्यान्ची उत्पत्ती करिता सादर | छत्र, चामरे, वस्त्रे, अलन्कार | अर्पिता साधे 'दास्य_भक्ती' (२.६८) [४.७.१_८]

देवालयान्च्या पशुशाळा | नाट्य, नृत्य, गायन शाळा | स्वयम्पाक गृहे, भोजन शाळा | येथील सेवा ही 'दास्य_भक्ती' (२.६९) [४.७.९_१४]

देवालयान्च्या धर्मशाळा | वार्षिकोत्सव, दीपोत्सव, जयन्त्या | इत्यादि कामात मदत करिता | साधेल दैवी 'दास्य_भक्ती' (२.७०) [४.७.१५_२०]

देवालयातील सडा संमार्जन | पात्र, वस्त्र, स्तम्भ प्रक्षालन | आल्या गेल्यान्चे स्वागत संभाषण | ही कर्मेही 'दास्य_भक्ती'चीच (२.७१) [४.७.१५_२८]

आता एका 'सख्य_भक्ती' | अर्जुन, विभीषण, सुग्रीवा सारखी | 'सख्यत्व' जोडोनि भगवन्तापाशी | आयुष्य अपावे त्याचे चरणी (२.७२)

देव म्हणिजे आपुलाच 'प्राण' | 'श्वासोद्ध्वासा' प्रमाणे निकटच | 'आत्मा_रामाचे' हे सान्निध्य | सहजच सम्प्राप्त सर्वासी (२.७३) [४.८.१_१४]

देव भक्तान्चा कैवारी | देव अनाथान्चे रक्षण करी | करुणा सागर पतितोद्दारी | तयासी दुरी लोटताच न ये (२.७४) [४.८.१८_३२]

नववी भक्ती 'आत्मनिवेदन' | 'मी' कोण आहे या स्वदेहात ? | आबालतः वार्धक्यात | पालटत्या शरीरात 'मी' वसे कोण ? (२.७५) [४.९.१_१०]

तो परमात्मा विश्वम्भर 'सागर' | मी त्याचाच 'अंश' एखाद्या थेम्बासम | हे "अहम् ब्रह्माऽस्मि", "सोऽहम्" ज्ञान | निरहन्कारपणे जाणावे (२.७६)

परमेश्वराची जी जी लक्षणे | ती ती सर्वही स्वतःतही पाहणे | निरहन्कारपणे तैसेचि वागणे | हीच 'आत्मनिवेदन' भक्ती जाणावी (२.७७)

"लोकी राहणे" ती सालोक्यता | "समीप वसणे" ती सामीप्यता | रूप_पोषाखे सारूप्यता | साध्य होई (२.७८) [४.१०.२४]

व्यासपीठावर नाटक करिता | कोणी शिव कोणी विष्णू जाहला | मुखासी निळा रंग लावून जाहला | सारूप्यता साधावया काही काळ (२.७९)

या तीनही मुक्ती नाशिवन्त | सायुज्य मुक्ती ते शाश्वत | निर्गुण भक्तीचे ते फळ अचळ | सद्गुरु कृपेने होईल साध्य (२.८०) [४.१०.२७_३१]

इति श्रीसमर्थ_रामदास विरचित दासबोध ग्रन्थात् मथित "सन्क्षिप्त दासबोधामृत"सारे

"स्वगुण_परीक्षा तथा त्रिविध_ताप तथा नवविधा_भक्ती" नाम द्वितीयोऽध्यायः